आरती दुर्गा जी की

जिन पर हैं प्रसन्न, उनके कटें सभी फंद ।
होवें सकल आनंद कीजै माता जी की आरती ॥ टेक ॥

ध्यावें देवी को संसार, मुख से बोलें जय जयकार ।
सभी नर और नार वेद पढ़ते हैं विद्द्यार्थी ॥

स्वर्ण का सिंहासन, जापे मारे बैठी आसान ।
हो रही मंदिर मैं इंद्रासन घण्टा झालर झंकारती ॥१॥ जिन० ॥

करले हो मन ज्ञान, धरलें माता जी का ध्यान ।
काम सभी होवें परवान, ज्ञान हृदय से उच्चारती ॥

वाहे सुने टेर, जरा लावे नहीं देर ।
खबर जल्दी ले सवेर फूल माला गल सिंगारती ॥२॥ जिन० ॥

करें सिंह की सवारी, दुर्गा लगे बहुती प्यारी ।
वाके चरणों में बलिहारी, ठाढ़े दुश्मन को ललकारती ॥

लौंकड़िया अगवानी, ख़ुशी हुई महारानी ।
आगे दानव भयमानी, जहां असुरन को मरती ॥३॥ जिन० ॥

शीश ऊपर सोहे छत्र, पहने सूहे-सूहे वस्त्र ।
अष्टभुजा धारी शस्त्र, विच दाल के किलकारती ॥

सुनले हंस प्यारा, दुर्गा करेगी निस्तारा ।
लिया उसी का सहारा बेड़ा भवसागर से तारती ॥४॥ जिन० ॥

सेवक खेवत हैं कपूर, सबकी होती है मंजूर ।
पाप भागें सभी दूर, रोग कष्ट को निवारती ॥

जिसने हेत लगाया, पण पुष्प जो चढ़ाया ।
मुख से माँगा सोई पाया, चितरंज को निवारती ॥५॥ जिन० ॥

मैया ऋ ऋद्धि दे , सिद्धि दे, अष्ट नव निधि दे ।
वंश मे वृद्धि दे वाक वाणी ॥

हृदय में ज्ञान दे, चित में ध्यान दे ।
महा वरदान दे राजरानी ॥

गुणी से रीत दे, जंग में जीत दे ।
चरणों में प्रीत दे, श्री भवानी ॥

दुःख को दूर कर, सुख भरपूर कर ।
भय चिंता दूर कर, जगती जोत देवा महारानी ॥

जोत जगती भवानी, ब्रह्मा विष्णु के मनमानी ।
ध्यावें गुणी और ज्ञानी, अटके कारज सुधारती ॥

ऐसी सच्ची माई, कलियुग में सहाई ।
करे संकट में सहाई, अपने सेवक को उभारती ॥ जिन० ॥